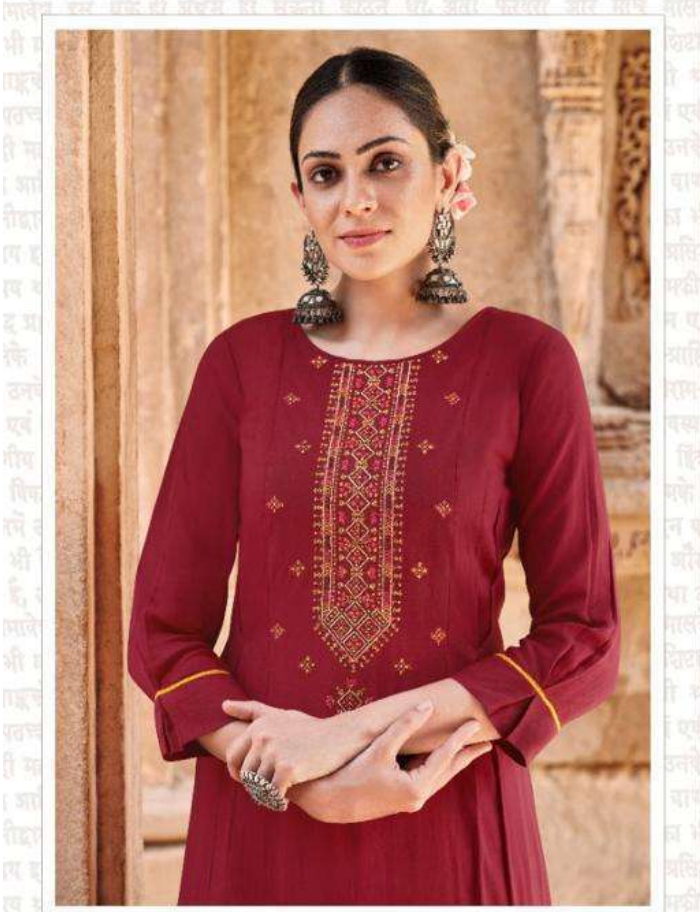


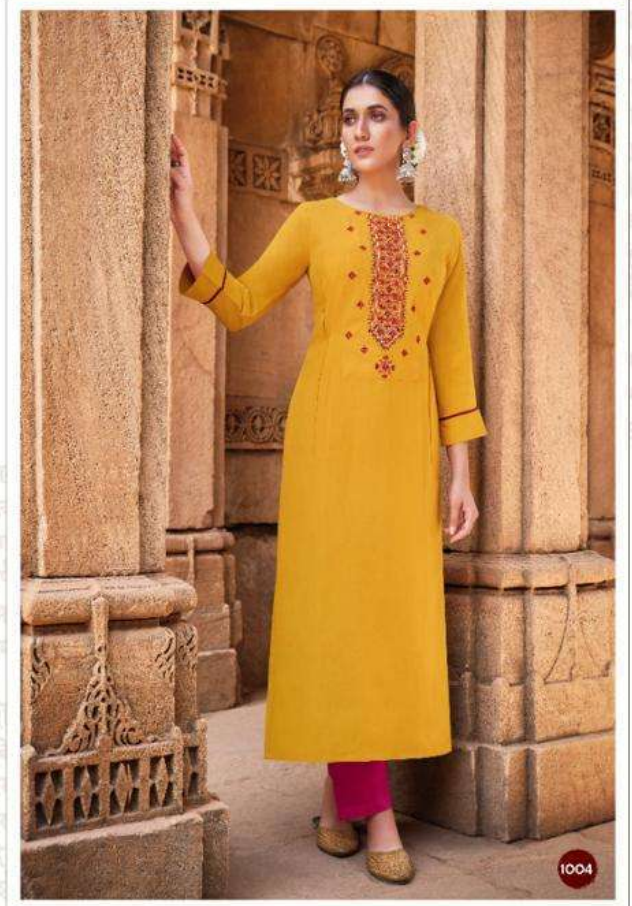
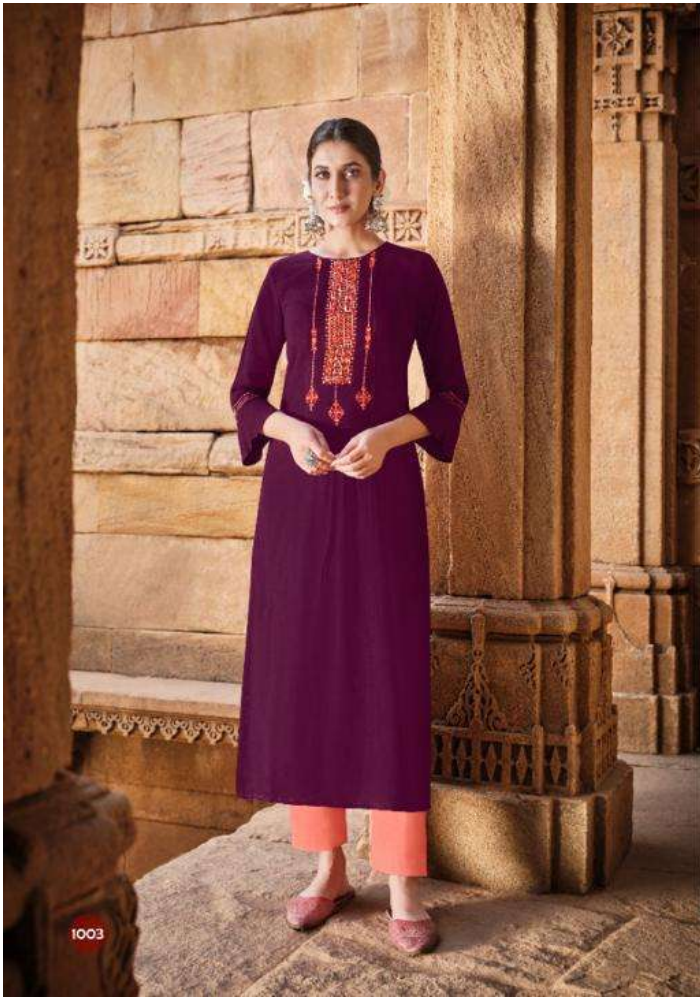
(८) श्रीरामायः रामक पद विरचयत् न च्युत ६ । श्रीरामायः १०५ नात पचाद्व



द प्रसूत स्थानों, पर्वतों, नदियों एवं सरोवरोंका माहात्म्य तथा श्रीरामके घन-गमन प



1007



पिकट और संपूर्ण प्रतिस्पर्धिते मुज
न प
रुपा
पक
क
दण्ड
श्री
धर
भ
द 1 3
प्र
मके
ल्लव
सुरोव

भ
भ
श्री
रिस
पो,
रकर
भं
दर
श्री
मद
विपादित ह । भारत दध तथा विद् समाज

मे भगवान् भीरम और भगवती भीतीलके
के कीर्तनालीय आनयों विगतों पर भक्तोंके
भीर
भीर
दरिदों
नरिक
हसमें
साहा



पि दुलक इदका जसका व १ जगमद आरामके
एव भीरामभक्तके सुन्दर और रोचक आरुमा





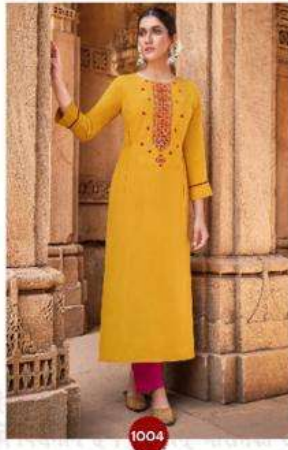
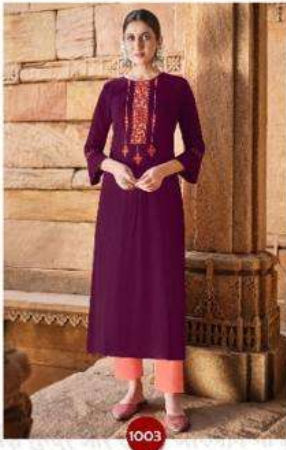
1005



प्रायः एक ही अङ्गमें ही सफला कठिन धा, अता करवरी और मार्ग माखे
भी प्रथमः प्रथम और वितीय परिशिष्टाणके रूपमें प्रकटित हंस। दोनों परिशिष्ट
अङ्कको
सत्त्व,
नी मह
आदि
श्रीराम
य इस
य भी

श्रीराम
य इस
क भ
मदि
श्रीरामके सुन्दर और रोचक आख्यान भी इसमें विपणन है। भगवान् श्रीरामकी
प्रहस्य सानों, पर्वतों, नदियों एवं सरोवरोंका माहात्म्य तथा श्रीरामके जन-गमन ए

भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति । भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति । भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति ।



भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति । भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति । भारतमात्रेणैव विश्वं शाश्वतं भविष्यति ।